अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2015) | दिनांक 21.12.2015

छठा वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

पच्चीस बोल, तत्त्वचर्चा, पच्चीस बोल की चरचा, पच्चीस बोल की चतुर्भंगी – 20

प्र.1 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्दों में लिखें – 5

(क) वह कौन सी काय है जहाँ एक शरीर में अनंत जीवों का वास होता है?

(ख) जंगम जीव किस काय का जीव है?

(ग) देवों के कितनी पर्याप्तियाँ मानी गई हैं?

(घ) किस गति में असंज्ञी जीव सबसे ज्यादा पाये जाते हैं?

(ङ) किस गति के जीव नो संज्ञी नो असंज्ञी कहलाते हैं?

(च) कौन सा शरीर मृत्यु के बाद कपूर की भांति उड़ जाता है?

(छ) सिद्धों में कौन–कौन सी आत्मा पाई जाती है?

प्र.2 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – 5

(क) आश्रव आज्ञा में या आज्ञा के बाहर? (ख) जीवास्तिकाय आज्ञा में या आज्ञा के बाहर?

(ग) कर्मों को बांधने वाला छह में कौन? नौ में कौन?

(घ) पुद्गलास्तिकाय छह में कौन? नौ में कौन?

(ङ) अठारह पापों के सेवन का त्याग करना छह में कौन? नौ में कौन?

(च) अधर्म छह में कौन? नौ में कौन? (छ) बंध धर्म या अधर्म?

प्र.3 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – किसमें व कौन से? 5

(क) दस योग (ख) आठ उपयोग (ग) नौ गुणस्थान (घ) जीवतत्त्व के नौ भेद

(ड) सतरह दण्डक (च) तीन द्रव्य (छ) तीन चारित्र

प्र.4 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – 5

(क) लेश्या किस कर्म का उदय (ख) किस संवर के जीव कम किस संवर के जीव अधिक?

(ग) आश्रव किस कर्म का उदय (घ) किस जीव तत्त्व के जीव कम किस तत्त्व के अधिक?

(ड.) इन्द्रियाँ जीव या अजीव (च) गुणस्थान किस कर्म का उदय

(छ) आत्मा किस कर्म का उदय

प्रतिक्रमण, जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खण्ड), कर्म प्रकृति – 20

प्र.5 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें – 10

(क) आत्म द्वार (ख) भाव की परिभाषा लिखते हुए औदायिक भाव की व्याख्या करें।

(ग) मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से होने वाली अवस्थाएँ बताएँ।

(घ) दर्शनावरणीय कर्मबंध के हेतु व्याख्या सहित लिखें।

(ड.) निर्जरा के भेद व्याख्या सहित लिखें।

(च) षड़द्रव्य द्वार के अंतर्गत पांच अस्तिकाय प्रदेशयुक्त.....संख्या में अनंत हैं (तक पूरा करें)

(छ) द्रव्य क्षेत्रकाल भावगुण द्वार के अंतर्गत आश्रव, संवर व निर्जरा की व्याख्या करें।

प्र.6 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें – 4

(क) सम्यक्त्व के भूषण 'अथवा' अनर्थदण्ड विरमण व्रत के अविचार लिखें।

(ख) शक्र स्तुति लोगहियाणं से लेकर धम्मदयाणं तक 'अथवा' ईर्यापथिक सूत्र ओसा–उत्तिंग से लेकर किलामिया तक लिखें।

प्र.7 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए – 6

(क) चारित्र मोह कर्म के लक्षण व कार्य का यंत्र में से अनंतानुबंधी व संज्वलन 'अथवा' प्रत्याख्यानी व अप्रत्याख्यानी को समझाएँ।

(ख) कर्म के विपाकोदय में कार्यकारी निमित्त 'अथवा' निकाचना की व्याख्या करें।
(ग) वेदनीय कर्म की स्थिति 'अथवा' नो कषाय की प्रकृतियों को विवेचित करें।

बावन बोल, इक्कीस द्वार, जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय व तृतीय खण्ड) – 20

प्र.8 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें – 6

(क) उदय के तैंतीस बोलों में सावद्य कितने? निरवद्य कितने?
(ख) जीव पदार्थ कितने भाव? यावत् मोक्ष पदार्थ कितने भाव?
(ग) बाईस परीषह किस–किस कर्म के उदय से?
(घ) चौदह गुणस्थानों में शरीर कितने?
(ड.) दया हिंसा कितने भाव? कितनी आत्मा? तथा छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

प्र.9 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें – 6

(क) अवधिज्ञानी में दण्डक, गुणस्थान, उपयोग व जीव के भेद?
(ख) संयतासंयति में योग, उपयोग, वीर्य व दण्डक?
(ग) भाषक में जीव का भेद, योग, दण्डक व गुणस्थान?
(घ) सूक्ष्म में आत्मा, लेश्या, जीव का भेद व दृष्टि?
(ड.) अचरम में उपयोग, भाव, आत्मा व दृष्टि?

प्र.10 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें – 8

(क) साध नै श्रावक.....कानी रे तथा श्रावक ने वखां.....जाणो रे। इन्हें पूरा करें। 'अथवा' शील आदरियो.....मांय तथा चोर हिंसक.....रेश। इन्हें पूरा करें।
(ख) गुणस्थान की परिभाषा करते हुए दूसरा, सातवां, आठवां व नवां गुणस्थान का नाम सहित व्याख्या करें। 'अथवा' प्रश्नोत्तर द्वार में से देव व नारक की गति, जाति, काय आदि लिखें।

लघु दण्डक व पांच ज्ञान – 20

प्र.11 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें – 12

(क) दृष्टि द्वार (ख) इन्द्रिय द्वार (ग) संस्थान द्वार (घ) ज्ञान द्वार (ड.) उत्त्पत्ति द्वार

प्र.12 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें – 8

(क) अवधिज्ञान का विषय 'अथवा' वर्धमान, हीयमान व प्रतिपाती अवधिज्ञान की व्याख्या करें।
(ख) अवधिज्ञान के द्वारा देखने की शक्ति का यंत्र 'अथवा' सम्पूर्ण आकाश के प्रदेश अनंत हैं से प्रारंभ करते हुए अगमिक श्रुत तक की व्याख्या करें।

संजया–नियंठा – 20

प्र.13 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें – 12

(क) संजया को प्रारंभ से लिखते हुए निरविचार तक पूरा लिखें।
(ख) सूक्ष्मसंपराय का सन्निकर्ष, अंतरद्वार तथा कालद्वार।
(ग) परिहार विशुद्धि का आकर्ष, स्थिति व अंतरद्वार।
(घ) सामायिक चारित्र का ज्ञान, काल व सन्निकर्ष द्वार।
(ड) छेदोपस्थापनीय का परिणाम, उपसंपदहान व कर्म वेदन द्वार।

प्र.14 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें – 8

(क) बकुश व निर्ग्रंथ का अर्थ लिखते हुए उनके प्रकारों की व्याख्या करें।
(ख) प्रतिसेवना व पुलाक का कालद्वार, सन्निकर्ष, असंपदहान व स्थिति द्वार लिखें।
(ग) कषायकुशील व पुलाक का क्षेत्रद्वार, गति, पदवी स्थिति, परिणाम व स्थिति लिखें।
(घ) स्नातक व बकुश का स्थितिद्वार, प्रवज्या द्वार, अंतरद्वार व सन्निकर्ष लिखें।